वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 296
ISBN 978-93-82071-25-9

नवदेवता विधान

– रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

द्वितीय संस्करण	वीर नि. सं. 2538	मूल्य
1100 प्रतियाँ	द्वि. भाद्रपद शुक्ला 4	32/-रु.

दशलक्षण महापर्व-19 सितम्बर 2012

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशक एवं सम्पादक :-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-: प्रबंध सम्पादक :-

बाल ब्र. जीवन प्रकाश जैन

विधान रचना काल-ईसवी सन् 1987
प्रथम संस्करण सन् 2008-1100 प्रतियाँ

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।

प्रतिदिन पूजन करने वाले भक्तजन यह अच्छी तरह से जानते हैं कि ये सारगर्भित पंक्तियाँ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित ''नवदेवता पूजन'' की हैं। अनेकानेक पूजाओं की रचना करने के साथ ही पूज्य माताजी ने अब तक लगभग 40 विधानों की रचना की है और सभी विधान एक से बढ़कर एक महिमाशाली हैं, सभी में शब्दों को मोतियों की भाँति पिरोया गया है।

इसी शृँखला में यह ''नवदेवता विधान'' आपके हाथ में है। इस विधान को पूज्य माताजी ने वीर निर्वाण संवत् 2513 में रचा था, जिसके उपरांत वीर निर्वाण संवत् 2534 में इसके प्रथम संस्करण के प्रकाशन का योग आया है। पूज्य माताजी द्वारा रचित साहित्य को हमें वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से प्रकाशित करने में अत्यन्त गौरव का अनुभव होता है। हम आज साहित्य का लेखन नहीं कर सकते, बड़े-बड़े पुराण-ग्रंथों को पढ़ नहीं सकते तो कम से कम पूज्य माताजी द्वारा लिखे गए साहित्य को प्रकाशित करवाकर उसे दूसरों तक पहुँचा तो सकते हैं, पता नहीं कब, किस कृति के द्वारा किस भव्यप्राणी की आत्मा का कल्याण हो जाता है!

आज भी दुनिया में ऐसे बहुत लोग हैं जो साहित्य को पढ़ने में रुचि रखते हैं, खासकर पूजा-विधानों की अधिक मांग रहती है। पूज्य माताजी द्वारा रचित अन्य विधानों की भांति यह ''नवदेवता विधान'' भी सभी के मनोरथों की सिद्धि करने के साथ-साथ कर्मनिर्जरा में निमित्त बने, यही मंगलभावना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और जिनचैत्यालय, ये नवदेवता माने जाते हैं। ये नवदेवता महान पूज्य होते हैं, इनकी आराधना, पूजा आदि करने से भव्यप्राणियों को महान पुण्य का बंध होता है।

ये नवदेवता ढाई द्वीपों में रहते हैं अर्थात् जम्बूद्वीप, पूर्वधातकीखण्डद्वीप, पश्चिम धातकीखण्डद्वीप, पूर्व पुष्करार्धद्वीप और पश्चिम पुष्करार्धद्वीप ये ढाईद्वीप कहे जाते हैं, इनमें नवदेवता विद्यमान रहते हैं।

कई वर्षों पूर्व पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ''नवदेवता पूजन'' की रचना की थी, तब से आज तक वह नवदेवता पूजन देश के लगभग हर जिनमंदिर में भक्तगण करते आ रहे हैं, उसकी पंक्तियाँ वास्तव में बहुत ही सारगर्भित हैं–

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।

इसी शृँखला में पूजन-विधानों की अगली कड़ी के रूप में पूज्य माताजी ने दो ''नवदेवता विधान'' की रचना की, एक नवदेवता विधान (वृहत्) और दूसरा नवदेवता विधान (लघु), उसमें से यह लघु नवदेवता विधान आपके हाथों में है।

इस विधान में सर्वप्रथम नवदेवता पूजन है पुनः ढाईद्वीप संबंधि नवदेवताओं की पृथक्-पृथक् पाँच पूजाएँ हैं जैसे-जम्बूद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा, पूर्व धातकीखण्डद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा, पश्चिम धातकीखण्डद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा, पूर्व पुष्करार्धद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा एवं पश्चिम पुष्करार्धद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा, इस प्रकार इस विधान में कुल छह पूजाएँ हैं। नवदेवता पूजा के अतिरिक्त बाकी 5 पूजाओं में 34-34 अर्घ्य एवं 3-3 पूर्णार्घ्य हैं। इस प्रकार 34+34+34+34+34=170 अर्घ्य तथा 3+3+3+3+3=15 पूर्णार्घ्य हैं, 5 जयमाला के अर्घ्य हैं पुनः बड़ी जयमाला एवं विधान की प्रशस्ति है।

श्रावक के छह कर्तव्यों में से दो प्रमुख कर्तव्य हैं–दान और पूजा, जिन्हें समय-समय पर करते रहना श्रावकों की नैतिक जिम्मेदारी है।

अगर विचार करके देखा जाए तो पूजा करने में ही श्रावकों के पाँच अन्य कर्तव्यों का भी एकदेशरूप से परिपालन हो जाता है। जैसे-देवपूजा करने के साथ ही आचार्य-उपाध्याय-साधु आदि गुरुओं की भी पूजा कर लेते हैं, पूजन की पंक्तियों के माध्यम से स्वाध्याय भी हो जाता है, जितनी देर श्रावक पूजा करते हैं, उतनी देर निराकुलता से बैठने में संयम का परिपालन हो जाता है। भूख-प्यास की बाधा पूजनपर्यन्त सहन करना, यह एक प्रकार का तप है तथा विधान-पूजन में सामग्री आदि चढ़ाने से दान देने का पुण्य प्राप्त हो जाता है अतः प्रत्येक श्रावक को नित्यप्रति पूजन अवश्य करनी चाहिए।

विधान की प्रारंभिक नवदेवता वंदना की अंतिम दो पंक्तियाँ विशेष दृष्टव्य हैं-

जो वंदें नवदेवता, त्रिकरणशुचि त्रयकाल।
वे पावें नवलब्धियाँ, होवें मालामाल।।

आसानी से समझ में आ जाने वाली इन दो पंक्तियों में ही पूज्य माताजी ने कितना सार भर दिया है।

विधान की प्रशस्ति पढ़ने पर यह ज्ञात होता है कि पूज्य माताजी ने इस विधान की रचना वी. नि.सं. 2513 में की थी, अन्य किन्हीं विशेष कारणों से इसका प्रकाशन नहीं हो सका। पश्चात् वीर निर्वाण संवत् 2534 अर्थात् सन् 2008 में इसका प्रथम संस्करण प्रकाशित किया गया पुनः अब इसका लगातार प्रकाशन किया जा रहा है। इसके माध्यम से हम एक ही स्थान पर बैठे-बैठे ढाईद्वीपों में विराजमान सभी पूज्य नवदेवताओं की भक्तिपूजा करके महान पुण्य का संचय कर सकते हैं।

इस विधान को करके सभी श्रद्धालुभक्तगण अपने मनोवांछित कार्यों की सिद्धि करें, यही मंगलकामना है।

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भारत की वसुन्धरा सदैव से तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि रही है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तित्वों से सुशोभित है कि जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं।

ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व है– वर्तमान दिगम्बर जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जैन के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में कन्यारत्न 'मैना' का जन्म हुआ। छोटी सी आयु से ही अपनी माँ की प्रेरणावश जैन ग्रंथों के स्वाध्याय द्वारा इस बालिका ने अपने वैराग्य को भलीभाँति दृढ़ कर लिया और 18 वर्ष की अल्प आयु में शरदपूर्णिमा के दिन ही परिवार के प्रबल विरोध के बावजूद भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग के कठिन नियम धारण कर लिये। सन् 1953 में श्री महावीर जी (राज.) अतिशय क्षेत्र पर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से आपने क्षुल्लिका दीक्षा लेकर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। पुनः 1956 में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञानुसार उनके प्रथम पट्टाधीश शिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि देखकर ही गुरुवर ने आपको यह नाम प्रदान किया था। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में आपने सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण एवं जैन आगम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया तथा साथ ही सहस्रनाम मंत्रों की रचनापूर्वक अपनी लेखनी का शुभारंभ भी कर दिया।

60 वर्षों से साधनारत इन महान साध्वी ने अब तक 250 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं की प्रकाण्ड विदुषी पूज्य माताजी की काव्य प्रतिभा भी अद्वितीय है। जिनेन्द्र भक्ति के रस से भरे हुए न जाने कितनेही पूजन-विधानों की रचना पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी द्वारा की है। सन् 1995 में डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) ने पूज्य माताजी की विराट ज्ञान साधना को देखकर जैन इतिहास में प्रथम बार किसी साध्वी को 'डी.लिट्.' की मानद् उपाधि प्रदान की। पुनः इसके उपरांत 8 अप्रैल 2012 को पूज्य माताजी के 57वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

कर्मठता, दृढ़संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ वात्सल्य की प्रतिबिम्ब पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) में जैन भूगोल की अद्वितीय रचना-'जम्बूद्वीप' का निर्माण हुआ है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण भी पूज्य माताजी की अनुशक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। इसी प्रकार भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल तीर्थ का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में मात्र 22 माह के अल्प अन्तराल में हुआ है।

2600 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर (नालंदा) की जो धरती अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के जन्मकल्याणक से महान उत्साह एवं हर्ष को प्राप्त हुई थी वह काल के थपेड़ों से भले ही विस्मृत जैसी हो गयी हो, परन्तु जैन समाज के श्रद्धालुओं का वहाँ जाना हमेशा से जारी रहा और अब पूज्य ज्ञानमती माताजी के महान उपकार स्वरूप यह जन्मभूमि पुनः इस प्रकार जगमगा उठी है कि आने वाला भविष्य सदैव इसकी चमक से प्रभावित रहेगा।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982) एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (1998) का देशव्यापी प्रवर्तन सम्पन्न हुआ एवं कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ (2003) का प्रवर्तन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इन रथों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्तों की व्यापक प्रभावना हुई।

शैक्षणिक क्षेत्र में अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार इत्यादि पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं तथा आज भी हो रहे हैं। पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का अभिनंदन करने के लिए समाज ने उन्हें समय-समय पर युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, गणिनीप्रमुख, युगनायिका, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, भारतभूषण जैसी उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। वर्तमान में महाराष्ट्र प्रान्त के मांगीतुंगी पर्वत पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है।

24 घंटे में एक बार आहार लेकर, केशलोंच एवं पदविहार जैसी कठिन साधना करते हुए ब्रह्मचर्य एवं चारित्र के तेज को सर्वत्र बिखेरने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी भारतीय संस्कृति की महान धरोहर हैं, जिन्होंने 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों को पूर्ण किया है। 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ और सन् 2009 ''शांतिवर्ष'' के रूप में घोषित हुआ। राष्ट्रपति जी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

दीर्घकालीन तपस्विनी ऐसी पूज्यनीया माताजी ने सन् 2009 में अपने जीवनके 75 वर्ष पूर्ण किए जिसे सन् 2008 से 2009 तक राष्ट्रीय स्तर पर ''हीरक जयंती महोत्सव वर्ष'' के रूपमें मनाया गया।

वास्तव में आज के कलिकाल में भी आध्यात्मिक ज्ञान, चारित्र, साधना एवं मोक्षपथ को साकार करने वाले गुरुओं का जितना अभिनंदन किया जाये, उतना कम है। जो बिना कुछ कहे अपनी मुद्रा द्वारा ही शांति, संयम, सदाचार का उपदेश देते हैं ऐसे साधु इस भारत वसुन्धरा की शान हैं और हम जैसे जो भी प्राणीगण परमसौभाग्य से उनके चरणों में आश्रय प्राप्त कर लेते हैं, वे भी अपने जीवन को सही अर्थों में सार्थक कर लेते हैं।

ऐसे चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के श्रीचरणों में भावभीना कोटिशः नमन है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर नगरी एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। **सन् 1972** में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के नाम से दिल्ली में इस संस्था का जन्म हुआ।

सन् 1974 से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया और अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएं, मंदिर, कमरे, फ्लैट, कोठियां, भोजनालय, टंकी आदि बन चुके हैं। निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन भी होते रहते हैं। पूज्य माताजी एवं आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन **सन् 1974** से बराबर निर्बाध गति से चल रहा है। संस्थान के अंतर्गत ही **सन् 1972** में स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से **300** से भी अधिक ग्रंथ लाखों की संख्या में प्रकाशित हो चुके हैं। यहां जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक, गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ आदि के द्वारा धार्मिक शैक्षणिक एवं पारमार्थिक कार्यक्रम चलते रहते हैं। सन् 1975 से प्रारंभ पंचकल्याणकों में अब तक अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रति 5 वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से 4 महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्थान द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982 में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का 1045 दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई, सन् 1998 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार द्वारा अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हुआ। वहीं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से महामहिम राज्यपाल बिहार प्रान्त द्वारा प्रवर्तित **''भगवान महावीर ज्योति''** रथ के भारत भ्रमण से जनमानस भगवान महावीर के विषय में आगमसम्मत ज्ञान से परिचित हुआ है। जम्बूद्वीप स्थल पर समय-समय पर भव्य दीक्षाएं भी सम्पन्न हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान में 4 फरवरी सन् 2000 को प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी द्वारा उद्घाटित ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके अंतर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ निर्माण आदि कार्यक्रम हुए। सन् 2000-2001 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में बनारस हाइवे पर **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षातीर्थ''** का नवनिर्माण हुआ है तथा 6 अप्रैल सन् 2001 को ही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाए जाने वाले भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में पूज्य माताजी द्वारा रचित ''विश्वशांति महावीर विधान'' का विराट आयोजन प्रथम राष्ट्रीय

आयोजन के रूप में राजधानी दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में अक्टूबर 2001 में सम्पन्न हुआ। उसी जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत सन् 2003-2004 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कार्य द्रुतगति से हुआ है। ''नंद्यावर्त महल'' नामक तीर्थ परिसर वहाँ का विशेष दर्शनीय स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

कुण्डलपुर विकास संपन्न होने के पहले ही पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आगामी वर्ष 2005 को ''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाने का सारे देश को आह्वान किया और प्रेरणा दी। तदुपरांत पूज्य माताजी ससंघ ने कुण्डलपुर से 14 नवम्बर 2004 को भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि बनारस के लिए विहार किया और पूज्य माताजी के सानिध्य में बनारस में भगवान पार्श्वनाथ की जन्मजयंती 6 जनवरी 2005 को इस पार्श्वनाथ महोत्सव वर्ष का जोर-शोर के साथ सारे देश की जनता के बीच उत्तरप्रदेश के लोक निर्माण मंत्री-श्री शिवपाल सिंह यादव एवं अन्य अतिथियों द्वारा उद्घाटन किया गया। इस महोत्सव वर्ष के अंतर्गत सर्वप्रथम लम्बे समय से प्रतीक्षित भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी-सारनाथ में उनकी विशाल प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। तदुपरांत टिकैतनगर में भगवान महावीर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे उत्तरप्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय श्री मुलायम सिंह यादव ने भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर 'पार्श्वनाथ वर्ष' का शुभारंभ किया और भगवान पार्श्वनाथ की वह प्रतिमा ''पार्श्वनाथ दि. जैन इण्टर कालेज'' के परिसर में स्थापित की गई है। इसी श्रृंखला में सारे देश में 3 वर्ष तक भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव विविध आयोजनों के साथ मनाया गया, जिसका समापन भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तिखाल वाले बाबा के महामस्तकाभिषेकपूर्वक 4 जनवरी 2008 को हुआ।

21 दिसम्बर 2008 का दिवस संस्थान के लिए विशेष गौरवपूर्ण एवं ऐतिहासिक रहा, जब गणतंत्र भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का शुभाशीर्वाद लेने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पधारीं और विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन किया।

इस प्रकार आप सबके सहयोग से संचालित हो रहा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान अपनी चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तरखंड)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**
17. **श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॅट प्लेस, नई दिल्ली।**

परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**
5. **स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**

6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन, टिकैतनगर (उ.प्र.)।
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।

संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंजनई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।

18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या, शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लकदेहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. स्व. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गलीनीक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकनाग़ांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।

52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।

85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेन्द्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पंचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. विमला जैन ''विमल'' ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

विधान की सामग्री

(यहाँ मात्र सामग्री के नाम दिए गए हैं, मात्रा अपनी आवश्यकतानुसार ले लेवें)

1. श्रीफल – लगभग 200 (श्रीफल, हरे फल अथवा बादाम, सुपारी आदि जो भी चीज चढ़ाना चाहें)
2. चावल
3. बादाम
4. लौंग
5. गोला
6. हल्दी गाँठ
7. गोल सुपारी
8. पीली सरसों
9. कलावा
10. केसर
11. कपूर
12. एक-एक रुपये के पाँच सिक्के
13. यज्ञोपवीत
14. हार, मुकुट
15. रंगोली के रंग (पाँच प्रकार के)
16. मंडल के लिए तख्त (4×4 फुट)
17. तखत पर बांधने का कपड़ा (पीला या सफेद) 6×6 फुट
18. 5 कलश-5 नारियल

नवदेवता मण्डल विधान का नक्शा

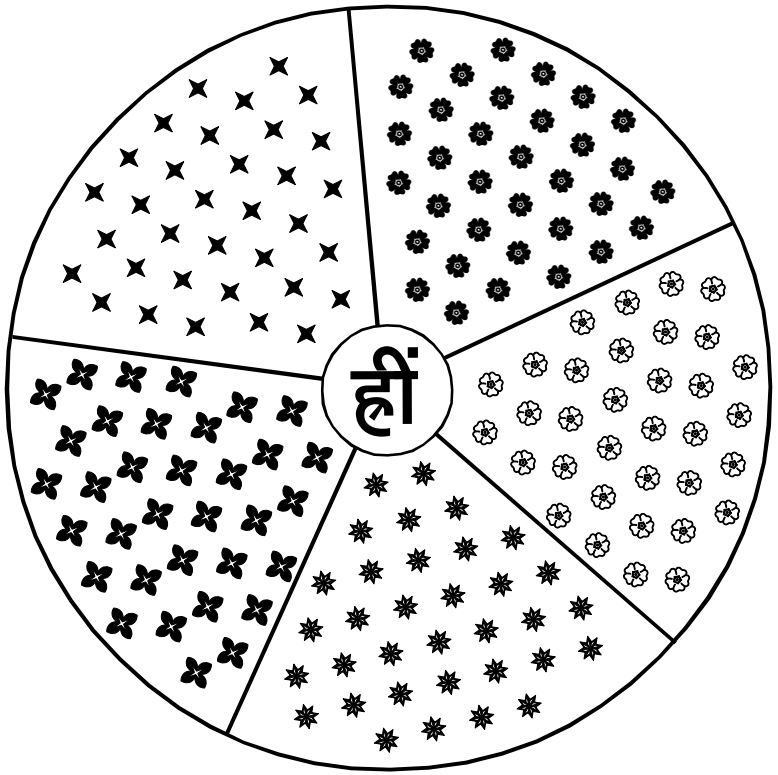

विषय-सूची

क्र.सं.	पूजा	पृष्ठ संख्या
1.	नवदेवता पूजन (समुच्चय)	3
2.	जम्बूद्वीप संबंधि नवदेवता पूजा	8
3.	पूर्व धातकीखण्डद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा	22
4.	पश्चिम धातकीखण्डद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा	36
5.	पूर्व पुष्करार्धद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा	50
6.	पश्चिम पुष्करार्धद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा	64-88

नवदेवता वंदना

–दोहा–

सिद्धि हेतु नव देवता, शत इन्द्रों से वंद्य।
नमूँ-नमूँ नित भक्ति से, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।1।।

छ्यालिस गुण को धारते, समवसरण के नाथ।
इन्द्रवंद्य अरिहंत को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

अष्टकर्म को नष्ट कर, अष्टगुणान्वित सिद्ध।
लोकशिखर पर राजते, वंदत सर्वसमृद्धि।।3।।

छत्तिस गुण को धारते, श्री आचार्य प्रधान।
उनके श्री चरणों नमूँ, बनूँ स्वात्म गुणवान।।4।।

अंग पूर्वज्ञानी महा, उपाध्याय गुरुदेव।
गुण पचीस को धारते, करूँ चरण की सेव।।5।।

अट्ठाइस गुणमणि धरें, साधु साधनालीन।
नग्न दिगम्बर मुनि नमूँ, बनूँ स्वात्म आधीन।।6।।

रत्नत्रयमय धर्म है, जीवदयामय धर्म।
नमूँ-नमूँ नित भाव से, पाऊँ शिवपद शर्म।।7।।

श्री जिनवाणी भारती, द्वादशांग अभिराम।
वंदन करते स्वात्मनिधि, मिले स्वात्म विश्राम।।8।।

जिनप्रतिमा जिनसारखी, सब कुछ देन समर्थ।
कृत्रिम अकृत्रिम सभी, नमूँ मिले सर्वार्थ।।9।।

जिनगृह संख्यातीत हैं, शाश्वत त्रिभुवन मान्य।
कृत्रिम कहें अनंत[1] भी, नमत मिले सुख साम्य।।10।।

जो वंदें नव देवता, त्रिकरणशुचि त्रयकाल।
वे पावें नवलब्धियाँ, होवें मालामाल।।11।।

अथ नवदेवता पूजाप्रतिज्ञापनाय मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

1. तीन काल की अपेक्षा कृत्रिम मंदिर अनन्त हो जाते हैं।

(पूजा नं.-1)

नवदेवता पूजन

(समुच्चय)

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतू, पुंज नवसु चढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांती हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।** (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

–सोरठा–

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देव देव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

–दोहा –

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं.-2)

जम्बूद्वीपसम्बन्धि नवदेवता पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद) –

इस प्रथम जम्बूद्वीप में, सब कर्मभू चौंतीस हैं।
अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु यहाँ जगदीश हैं।।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर-बिम्ब जिनमंदिर यहाँ।
पूजूँ इन्हें आह्वान कर, त्रयरत्ननिधि मिलती यहाँ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अथ अष्टक (नरेन्द्र छन्द) –

सरयू नदि का शीतल जल ले, जिनपद धार करूँ मैं।
साम्य सुधारस शीतल पीकर, भव-भव त्रास हरूँ मैं।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर चंदन घिस, जिनपद में चर्चूं मैं।
मानस-तनु-आगन्तुक त्रयविध, ताप हरो अर्चूं मैं।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल अक्षत ले, प्रभु नव पुंज चढ़ाऊँ।
निज गुणमणि को प्रगटित करके, फेर न भव में आऊँ।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यअक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा सेवंती, बासंती पुष्प चढ़ाऊँ।
कामदेव को भस्मसात् कर, आतम सौख्य बढ़ाऊँ।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यकामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी लड्डू पेड़ा, रसगुल्ला भर थाली।
तुम्हें चढ़ाऊँ क्षुधा नाश हो, भरें मनोरथ खाली।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णदीप में ज्योति जलाऊँ, करूँ आरती रुचि से।
मोह अंधेरा दूर भगे सब, ज्ञान भारती प्रगटे।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी अग्निपात्र में, खेवत उठे सुगंधी।
कर्म जलें सब सौख्य प्रगट हो, फैले सुयश सुगंधी।।

कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यअष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आड़ू लीची सेव संतरा, आम अनार चढ़ाऊँ।
सरस मधुर फल पाने हेतू, शत-शत शीश झुकाऊँ।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यमोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य बनाकर, सुवरण पुष्प मिलाऊँ।
भक्तिभाव से गीत-नृत्य कर, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – **यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।**
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिन चरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ निज गुण संपदा।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

पहले जम्बूद्वीप में, कर्मभूमि चहुँ दिक्क।
नव देवों को नित जजूँ, पुष्पाञ्जलि कर नित्य।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

मेरू पर्वत के पूरब में, वन भद्रशाल की वेदी है।
उस निकट देश 'कच्छा' विदेह, नदि पर्वत से छह भेदी है।।
मधि आर्यखण्ड में तीर्थंकर, मुनिगण नित विहरण करते हैं।
नव देव वहाँ पर नित्य रहें, पूजत ही नव निधि भरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश 'सुकच्छा' छह खण्ड में, शुभ आर्यखण्ड सुर मन मोहे।
वहाँ जिनवर मुनिगण नित विहरें, जिनधर्म जिनागम नित होहैं।।
नरपति मानव जिनवरमूर्ती, जिनमंदिर नित बनवाते हैं।
हम पूजें इन नव देवों को, ये नवनिधि रिद्धि दिलाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वहाँ देश 'महाकच्छा' छहखण्ड, उसमें आरजखण्ड शोभ रहा।
जिनवर के समवसरण दिखते, साधूगण से मन मोह रहा।।
जिनधर्म प्रवर्ते जिनवाणी, जिनमंदिर जिनप्रतिमायें हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये निज संपत्ति दिलाये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वहाँ देश 'कच्छकावती' दिपे, आरजखण्ड में तीर्थंकर हों।
श्री पंच परमगुरु पूज्य वहाँ, जिनधर्म जिनागम हितकर हों।।
जिनचैत्य जिनालय रत्नों के, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आवर्ता' देश अधिक सुन्दर, वहाँ शाश्वत कर्मभूमि रहती।
वर आर्यखण्ड में तीर्थंकर, मुनिगण से पूज्य दुःख हरती।।

जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश 'लांगलावर्ता' शुभ, उस मध्य आर्यखण्ड शोभे है।
वहाँ पर केवलि श्रुतकेवलि मुनि, जिनधर्म जिनागम शोभे हैं।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वहाँ देश 'पुष्कला' छह खण्डों में, आर्यखण्ड अतिप्यारा है।
तीर्थंकर आदि महापुरुषों से, पूज्य सतत सुखकारा है।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वहाँ देश 'पुष्कलावती' सुखद, उस आर्यखण्ड में धर्म दिपे।
तीर्थंकर केवलि विहरण नित, करते रहते निज कर्म खिपें।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण दिश में, 'वत्सा' विदेह कहलाता है।
इसके मधि आर्यखण्ड सुन्दर, नित धर्मसुधा बरसाता है।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सादेशस्थित आर्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ देश 'सुवत्सा' पूरब में, छह खण्ड मध्य आरज खण्ड है।
तीर्थंकर केवलि मुनि विहरें, जिनधर्म जिनागम संतत हैं।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेह सुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ देश 'महावत्सा' विदेह, चौथा ही काल सतत वर्ते।
तीर्थंकर विहरें ऋद्धि धारि, मुनिगण हैं भवि जिनवर अर्चें।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेह महावत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ देश 'वत्सकावती' मध्य, शुभ आर्यखण्ड जन मन मोहे।
जिनवर गणधर मुनिगण विहरें, दर्शन से पाप खण्ड होहैं।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'रम्या' देश विदेह रम्य, छह खण्ड में आर्यखण्ड सुन्दर।
केवलि चारण ऋद्धी मुनिगण, नित विहरें भक्ति करें सुर नर।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश 'सुरम्या' पूरब में, इक आर्य खण्ड में कर्मभूमि।
तीर्थंकर मुनिगण नित होते, भवि प्राप्त करें नित मुक्ति भूमि।।

जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रमणीया' देश विदेह वहाँ, शाश्वत ही कर्मभूमि रहती।
तीर्थंकर साधूगण होते, नहिं ईति भीति वहाँ हो सकती।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीदेह 'मंगलावती' देश, वहाँ पूर्वकोटि उत्तम है आयु।
जिनवर मुनिगण से पावन भू , पण शतक धनू ऊँची है काय[1]।।
जिन चैत्य जिनालय अतिसुन्दर, सुरनर बनवाते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, ये साम्य सुधारस भरते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– शेर छंद–

पश्चिम विदेह भद्रशाल वेदि के निकट ।
'पद्मा' विदेह देश है आर्य से प्रगट।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिमविदेह देश 'सुपद्मा' सुमान्य है।
इस आर्यखण्ड में जिनेश विद्यमान हैं।।

---

1. काया – शरीर।

तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीदेह ''महापद्मा'' के आर्यखण्ड में।
नव देव देव रहते मुनिवंद्य विश्व में।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर ''पद्मकावती'' विदेह आर्यखण्ड में।
सुरवृंद से भि पूज्य पुण्य नर वहाँ जन्में।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''शंखा'' विदेह देश में सम्यक्त्व का झरना।
जिनदेवदेव की वहाँ लेते सभी शरना।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''नलिना'' विदेह देश में पाखण्ड ना दिखे।
भविजन सदा जिनदेवदेव रूप को निरखें।।

तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''कुमुदा'' विदेह देश में श्रावक सदा रहें।
पूजा व दान-शील व उपवासरत रहें।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिमविदेह ''सरित'' देश खण्ड छह वहाँ।
मधि आर्यखण्ड में भविक जिनभक्त हैं वहाँ।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसरितादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''वप्रा'' विदेह देश में जिन अर्चना सदा।
सुरगण भी वहाँ आयके उत्सव करें मुदा।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम विदेह देश''सुवप्रा'' सुशोभता।
छह खण्ड मध्य आर्यखण्ड चित्त मोहता।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदेह ''महावप्रा'' के आर्यखण्ड में।
नित जैनधर्म वर्ते भवि कर्म को हनें।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।27।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'वप्रकावती' विदेह आर्यखण्ड में।
मिथ्यात्व वेषधारी नहिं एक भी उनमें।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।28।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा' विदेह देश में छह खण्ड शोभते।
नित आर्यखण्ड में वहाँ मुनि कर्म धोवते।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।29।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम विदेह देश 'सुगंधा' महान है।
इस मध्य आर्यखण्ड सर्वसौख्य खान है।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।30।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदेह 'गंधिला' विषे छह खण्ड बने हैं।
इक आर्यखण्ड में मुनीन्द्र धर्म भणे हैं।।

तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।31।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'गंधमालिनी' विदेह देश सुहाना।
छह खण्ड मध्य एक आर्यखण्ड बखाना।।
तीर्थेश आदि पंच गुरू नित्य वहाँ हैं।
जिनबिंब जिनालय जजूँ जितने भी वहाँ हैं।।32।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

इस प्रथम जम्बूद्वीप में, दक्षिण दिशी वर भरत है।
छह खण्ड में इक आर्यखण्ड, यहाँ काल छह वर्तंत हैं।।
चौथे सुयुग में तीर्थकर, केवलि ऋषीगण विहरते।
युग पांचवें तक धर्म जिनवर, धाम प्रतिमा भवि जजें।।33।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि दक्षिणदिग्भरतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस द्वीप में उत्तरदिशी, है क्षेत्र ऐरावत कहा।
छह खण्ड आरजखण्ड में, जब काल चौथा हो वहाँ।।
तीर्थेश चारण मुनि तभी, विहरें जगत् कलिमल हरें।
युग पाँचवें तक धर्म जिनगृह, बिंब पूजत सुख भरें।।34।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि उत्तरदिगैरावतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु पण परमेष्ठि हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, बिंब जिनगृह इष्ट हैं।।

नवदेवता ये मान्य जग में, हम सदा पूजें इन्हें।
नव निद्धि रिद्धि समृद्धि दाता, नित्यप्रति वंदूं इन्हें।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुत्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

कच्छा सुकच्छा आदि में, नित आर्यिकायें विहरतीं।
इस भरत आरज खण्ड में, ब्राम्ह्यादि साध्वी हो चुकीं।।
तब से व पंचम काल अन्ते, आर्यिकायें होएंगी।
ऐरावतारज खण्ड की, साध्वी जजूँ अघ धोएंगी।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिकसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस द्वीप में तीर्थंकरों के, पंचकल्याणक सदा।
भू पर्वतादी पूज्य पावन, तीर्थ होते शर्मदा।।
गणधर मुनीश्वर के यहाँ, तप ज्ञान मुक्तिस्थल हुये।
इन क्षेत्र को मैं नित्य पूजूँ, नित्य मंगल परिणये।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थिततीर्थंकरगणधरमुनिगणपंचकल्याणकादितीर्थक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।** (108 बार)

जयमाला

–नरेन्द्र छंद –

जय जय श्री अरिहंत देव, जय सिद्ध प्रभू सुखकारी।
जय जय सूरी पाठक साधू , भव-भव दुख परिहारी।।
जय जिनधर्म जिनेश्वरवाणी, जय जिनबिंब जिनालय।
नव देवों को नित्य नमूँ मैं, ये हैं सर्व सुखालय।।1।।

जम्बुद्वीप का भरतक्षेत्र है, पण शत छब्बिस योजन।
छह खण्डों में आर्यखण्ड इक, यहाँ काल परिवर्तन।।

चौथे युग में अर्हंतादिक, नवों देव रहते हैं।
पंचम युग में आचार्यादिक, सात देव रहते हैं।।2।।

ऐरावत में भरतक्षेत्रसम, सर्व व्यवस्था मानी।
बत्तिस क्षेत्र विदेहों में, नित वर्ते जिनवर वाणी।।
कच्छा देश विदेह दो सहस, दो सौ बारह योजन।
भरतक्षेत्र से चतुर्गुणाधिक, सब विदेह हैं उत्तम।।3।।

चौंतिस आर्यखण्ड में इक इक, उप सागर हैं माने।
यहाँ भरत में उपसागर, उपनदियाँ बहुत बखाने।।
कर्मभूमि में मनुष धर्म कर, स्वर्ग मुक्ति पद पाते।
रत्नत्रय से निज निधि पाकर, शाश्वत सुख पा जाते।।4।।

शुभ से पुण्याश्रव पापाश्रव, अशुभ भाव से होता।
इससे आठ कर्म बंध जाते, फल पाते दुख होता।।
कोई ज्ञान प्रशंसा करते, उसमें ईर्ष्या होती।
जान बूझ कर ज्ञान छिपावे, तब निन्हव का दोषी।।5।।

नहीं बताना ज्ञान अन्य को, यह मात्सर्य दुखारी।
ज्ञान ध्यान में विघ्न डालना, अन्तराय है भारी।।
अन्य प्रकाशित ज्ञान रोककर, आसादन कर लेना।
सत्य ज्ञान में दोष लगा, उपघात दोष कर लेना।।6।।

ज्ञान विषय में इन कार्यों से, ज्ञानावरण बंधे है।
दर्शनविषयक इन कार्यों से, दर्शन रज चिपके है।।
हे प्रभु! मुझ घर कर्मशत्रु ये, प्रतिक्षण आते रहते हैं।
रुक जाते फिर समय पायकर, ज्ञान दरस ढकते हैं।।7।।

नाथ! इन्हीं से मैं अज्ञानी, पूर्णज्ञान नहिं प्रगटे।
प्रभो! युक्ति ऐसी दे दीजे, 'ज्ञानमती' बन चमकें।।
केवलज्ञान स्वभावी आत्मा, केवलदर्श स्वभावी।
नाथ! आपकी कृपा प्राप्त कर, बनूँ निजात्म स्वभावी।।8।।

–दोहा–

इंद्र वंद्य नव देवता, कर्मभूमि में सिद्ध।
अन्य जगह बस दो रहें, जिनगृह जिनवर बिंब।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भक्ति से नव देवता विधान करेंगे।
वे भव्य नवों निधी से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य 'ज्ञानमती' से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्ष महल में अनंत काल रहेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.-3)

पूर्व धातकीखण्डद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा

–अथ स्थापना (नरेंद्र छंद)–

पूर्व धातकीखण्डद्वीप में, कर्मभूमि चौंतिस हैं।
इनमें अर्हत् सिद्ध सूरि, पाठक साधू मुनिगण हैं।।
जिनवरधर्म जिनागम जिनवर, प्रतिमा जिनगृह सोहें।
आह्वानन कर पूजूँ मैं नित, ये मुझ अघ मल धोहैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (द्रुतविलंबित छंद)–

गगन गंग नदी जल लाइया। जिन पदाम्बुज धार कराइया।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभि चंदन गंध घिसाइया। जिन पदाम्बुज अग्र चढ़ाइया।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अक्षत पुंज चढ़ाइया। सुख अखंडित आश लगाइया।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम रंग बिरंग चढ़ाइया। अमल आतम कीर्ति बढ़ाइया।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मिष्ट चरू अर्पण करूँ। उदर व्याधि हरो अर्चन करूँ।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल दीप शिखा आरति करूँ। हृदय मोह मिटे भारति भरूँ।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभि धूप अगनि में खेवते। अशुभ कर्म नशें तुम सेवते।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर आम अनार भले-भले। फल चढ़ाय मनोकलिका खिले।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फलादिक अर्घ्य चढ़ायके। रतन त्रय की आश लगायके।।
जजत हूँ नव देव सुभक्ति से। निज सुधारस हो तुम भक्ति से।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – **यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।**
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिन चरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ निज गुण संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा – **पूर्व धातकी खण्ड में, कर्मभूमि चौंतीस।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजहूँ, नमूँ नमाकर शीश।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

–नरेंद्र छंद –

विजय मेरु की पूर्व दिशा में, भद्रसाल के पासे।
'कच्छा' देश विदेह कहाता, आर्यखण्ड नदि पासे।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' उसमें छह खण्ड, आर्यखण्ड अतिसुन्दर।
शाश्वत कर्मभूमि वहाँ मानव, धर्म करें अति सुखकर।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' छह खण्ड में, आर्यखण्ड नदि पासे।
मध्य राजधानी में जिनवर, विहरें मार्ग प्रकाशें।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' वहाँ पर, मध्य रजतगिरि सोहे।
रक्ता रक्तोदा से छह खण्ड, आर्यखण्ड मन मोहे।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आवर्ता' पूरब विदेह में, आर्यखण्ड मनहारी।
श्रावकगण जिनभक्ती करके, बनें सर्वगुणधारी।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' उसमें, आर्यखण्ड सुखकारी।
गगन गमनचारी मुनि विहरें, गुरु वंदन दुखहारी।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' छह खण्डों में, बंटा आर्यखण्ड उसमें।
जिनवर पंचकल्याणक उत्सव, करते सुरगण मुद से।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' सुहाता, आर्यखण्ड की महिमा।
तीर्थंकर चक्री हलधर हरि, इनसे बढ़ती महिमा।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवारण्य वेदिका पासे, सीता के दक्षिण में।
'वत्सा' देश विदेह सुहाता, आर्यखण्ड इस मधि में।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' पूरब में है, छह खण्डों से सोहे।
एक आर्य अरु पाँच म्लेच्छ-खण्डों से सुर मन मोहे।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' पूरब में, सुर किन्नर गुण गाते।
तीर्थंकर का जन्म महोत्सव, सुरपति आय मनाते।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' सुहाना, मध्य रजतगिरि सोहे।
विद्याधर विद्याधरियों से, सुरगण का मन मोहे।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह पूर्व में, शाश्वत चौथा युग है।
तीर्थंकर केवलि श्रुतकेवलि, विहरें वहाँ सतत हैं।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' आर्यखण्ड में, कर्मभूमि शाश्वत है।
मुनिगण कर्म काट शिव वरते, सुर नर मनभावन है।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व विदेह देश 'रमणीया', यथा नाम गुण वैसा।
आर्यखण्ड में साम्यसुधारस, की करते मुनि वर्षा।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' वहाँ पर, नित नव मंगल होते।
आर्यखण्ड में ऋषिगण विहरण, कर्मकालिमा धोते।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु पंचगुरु नित हैं।
धर्म जिनागम प्रतिमा जिनगृह, जजत मिले निज सुख है।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– गीता छन्द–

मेरू विजय के अपर दिश, वन वेदिका के निकट में।
'पद्मा' विदेह सुदेश है, उस मध्य आरज खण्ड में।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश 'सुपद्मा' वहाँ पर, खण्ड छह में ख्यात है।
तीर्थंकरों के जन्म से, पावन धरा खण्डार्य है।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम विदेहे 'महापद्मा',खण्ड छह विख्यात हैं।
उस मध्य आरजखण्ड में, सुरगण रमें दिन-रात हैं।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'पद्मकावति' देश में, छह खण्ड में इक आर्य है।
जिन पंचकल्याणक महोत्सव, इन्द्र गण से मान्य हैं।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखा' विदेह वहाँ सतत, तीर्थंकरों की अर्चना।
चक्रेश हलधर खगपती, सुरपति करें जिन वंदना।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' विदेह जिनेश्वरों के, जन्म तप से वंद्य है।
मुनिगण गगनचारी वहाँ, निज आत्मसुख में मग्नहैं।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदा' विदेह सुअपर दिश में, खण्ड छह अतिसोहते।
इक खण्ड आरज में जिनेश्वर, धर्म भवि अघ शोधते।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम विदेहे 'सरित' में, छह खण्ड में इक आर्य है।
उसमें जिनेश्वर अर्चना, करते भविक शिरधार्य हैं।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसरित्देशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिश अपर भूतारण्य वेदी, निकट 'वप्रा' देश है।
छह खण्ड में इक आर्य है, उसमें दिगंबर वेष है।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम 'सुवप्रा' देश में, छह खण्ड में रजताद्रि है।।
नदि पास आरजखंड में, सुरवंद्य जिनवर अंघ्रि हैं।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम 'महावप्रा' मधी, छह खण्ड में पण म्लेच्छ हैं।
इक आर्यखण्ड नदी तरफ, उसमें दिगंबर वेष है।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'वप्रकावति' देश में, आकाशगामी ऋषि रहें।
नित आत्म अनुभव लीन हों, निज कर्ममल को धो रहें।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा' विदेह सुहावना, छह खण्ड से शोभित सदा।
इस मध्य आरजखण्ड में, मुनिराज विहरें शर्मदा।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम 'सुगंधा' देश में, नहिं ईति भीति कभी वहाँ।
शाश्वत चतुर्थ सुकाल वर्ते, धर्मवृष्टी हो वहाँ।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस 'गंधिला' वर देश में, हैं आर्य आरजखण्ड में।
निज आत्मगुण की गंध को, फैला रहे नभ खण्ड में।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'गंधमालिनि' देश में, गणधर मुनीगण नित दिखें।
संसार के संताप से, भविवृंद को रक्षित रखें।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुगण होते यहाँ।
जिनधर्म आगम मूर्ति जिनगृह, पूजते भविजन वहाँ।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद –

दक्षिणी दिक् भरत क्षेत्र शोभे वहाँ।
खण्ड षट् मध्य इक खण्ड आरज वहाँ।।
तीर्थकर केवली साधुगण धर्म है।
जैनप्रतिमा जिनालय जजत स्वर्ग है।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि दक्षिणदिग्भरतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरी दिक् सु ऐरावता क्षेत्र है।
खण्ड आरज वहाँ धर्म अभिप्रेत है।।
तीर्थकर केवली साधु जिनधाम हैं।
पूजते भव्य पाते निजी धाम हैं।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि उत्तरदिगैरावतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य(चौपाई) –

पूर्व धातकीखण्ड सुद्वीपा, चौंतिस कर्मभूमि सुख दीपा।
जिनवर मुनिगण जिनवरधामा, पूजत मिले शीघ्र शिवधामा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मभूमि में वर महिलायें, बनें आर्यिका निज सुख पायें।
इन सबको वंदामि हमारा, मातृभक्ति से मिले सहारा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित महाव्रतपवित्रसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी में तीर्थेशा, पंचकल्याणक क्षेत्र हमेशा।
गणधर मुनिगण के शिवथाना, तीर्थक्षेत्र पूजूँ गुणखाना।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित तीर्थंकरगणधरमुनिगणपंचकल्याणकादितीर्थक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–शेर छंद –

जय जय श्री अरिहंतदेव देवदेव हैं।
जय जय अनंत सिद्ध प्रभो! सिद्धि हेतु हैं।।
जय जय श्री आचार्यदेव रत्न प्रदाता।
जय जय सुउपाध्याय गुरु धर्म के दाता।।1।।

जय साधु आत्मसाधना में लीन हो रहे।
जय जय जिनेंद्र धर्मचक्र वर्तता रहे।।
जय जय श्री जिनभारती माँ पालती हमें।
जय जय जिनेंद्रबिंब जिनालय नमूँ तुम्हें।।2।।

वर पूर्वधातकी अवर में भरतक्षेत्र है।
योजन ये छह हजार छह सौ चौदह व्यास है।।
इक्यासि सहस पाँच सौ सतत्तरा कहा।
विदेह एक मान इतने योजनों रहा।।3।।

जो दुःख शोक और पश्चात्ताप का करना।
रोना व पर को मारना विलाप का करना।।
इनसे बंधे असाता जो दुःख हेतु हैं।
पुनरपि ये दुःख शोक का कारणस्वरूप हैं।।4।।

सब प्राणियों पे करुणा व्रतियों पे अनुकम्पा।
चउविध के दान देना मुनिव्रत धरें शुभा।।
शुभ योग ध्यान उत्तम शत्रू पे क्षमा हो।
हो लोभ त्याग शौचभाव देशव्रत भि हों।।5।।

पर वश से कष्ट सह अकामनिर्जरा करना।
मिथ्यात्व सहित बहुत विध के तप तपा करना।।
इन सबसे बंधे साता बहु सौख्य प्रदाता।
इंद्रियजनित ये सुख भी भव में ही भ्रमाता।।6।।

सम्यक्त्व सहित साता निर्वाण हेतु है।
हे नाथ! आप भक्ती भवसिंधु सेतु है।।
भगवन्! सभी असाता को दूर कीजिये।
साता में संक्रमित कर सुख पूर दीजिये।।7।।

सम्यक्त्व लब्धि देकर सज्ज्ञान दीजिये।
चारित्र लब्धि देकर निज पास लीजिये।।
हो 'ज्ञानमती' ज्योती अज्ञान नाशिये।
हे नाथ! दिव्य ज्योति मुझमें प्रकाशिये।।8।।

–दोहा–

पूर्वधातकी द्वीप में, कर्मभूमि चौंतीस।
नमूँ-नमूँ नव देव को, हाथ जोड़ नत शीश।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

–शेर छंद–

जो भक्ति से नव देवता विधान करेंगे।
वे भव्य नवों निधी से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्ष महल में अनंत काल रहेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.-4)

पश्चिम धातकीखण्डद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा

–अथ स्थापना (नरेंद्र छंद)–

अपरधातकीखण्डद्वीप में, भरतैरावत सुन्दर।
पूर्व अपरदिश सोलह-सोलह, देश विदेह मनोहर।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष आगम, जिनप्रतिमा जिनमंदिर।
आह्वानन कर जजूँ यहाँ पर, जजते इन्हें पुरन्दर।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अथ अष्टक(चाल-नंदीश्वर पूजा)–

सरयू नदि का जल स्वच्छ, जिनपद धार करूँ।
अघ धुलकर मन हो स्वच्छ, निज पद प्राप्त करूँ।।
नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर पीत, प्रभु पद चर्च करूँ।
मिल जावे निजगुण शीत, श्रद्धा भक्ति धरूँ।।

नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि किरणों सम अति श्वेत, अक्षत से पूजूँ।
निज के अखण्ड गुण हेतु, जिनपद नित पूजूँ।।
नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्य अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला मचकुंद गुलाब, पुष्प चढ़ाऊँ मैं।
हो जावे निज सुख लाभ, आप रिझाऊँ मैं।।
नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खुरमा रसगुल्ला मिष्ट, ताजे लाऊँ मैं।
हो क्षुधा वेदनी नष्ट, आप चढ़ाऊँ मैं।।
नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति उद्योत, आरति करते ही।
होवे निज ज्ञान प्रद्योत, घट तम विनशे ही।।

नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप सुगंधित खेय, कर्म जलाऊँ मैं।
जिनवर पद पंकज सेय, सौख्य बढ़ाऊँ मैं।।
नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला बादाम, पिस्ता भर थाली।
अर्पण करते निष्काम, मनरथ नहिं खाली।।
नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वर अर्घ्य चढ़ाय, जिनवर गुण गाऊँ।
रत्नत्रय निधि को पाय, अतिशय सुख पाऊँ।।
नव देवों को नित अर्च, नव निधि रिद्धि भरूँ।
नव-नव प्रतिभा को सर्ज, अभिनव सिद्धि वरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिन चरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ निज सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

परम पुरुष परमात्मा, परमानंद निमग्न।
पुष्पाञ्जलि कर पूजहूँ , करूँ मोह अरि भग्न।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

–चौपाई –

अचल मेरु के पूरब दिक्क, 'कच्छा' देश विदेह प्रसिद्ध।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' में छह खण्ड, नदी तरफ में आरज खण्ड।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' अतिशायि, आर्यखण्ड है अति सुखदायि।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' अनूप, आर्यखण्ड दर्पण चिद्रूप।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आवर्ता' विदेह छह खण्ड, आर्यखण्ड में सौख्य अमंद।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' सिद्ध , आर्यखण्ड में रिद्धि समृद्ध।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' में छह खण्ड, आर्यखण्ड में हैं भविवृंद।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' महान, वहाँ करें भविजन कल्याण।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण दिक्क, 'वत्सा' देश विदेह समृद्ध।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' अतिशय रम्य, भविजन भजें आत्मसुख साम्य।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' सुखधाम, आर्यखण्ड में धर्मललाम।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' विशाल, आर्यखण्ड में भव्य खुशाल।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह महान, चारण ऋषि विहरें गुणखान।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' में छह खण्ड, शाश्वत कर्मभूमि सुखकंद।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रमणीया' वर देश महान, भविजन भरते पुण्य निधान।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' अनूप, भविजन बनें स्वात्मसुख भूप।।
जिनवर मुनिगण जिनवरधाम, जिनवर बिंब जजूँ अभिराम।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेंद्र छंद –

अचल मेरु के पश्चिम दिश में, सीतोदा दक्षिण में।
भद्रसाल वेदी के पासे, 'पद्मा' देश अपर में।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' के छह खण्डों, मध्य आर्यखण्ड सोहे।
भविजन नित्य धर्म धारण कर, सुरगण का मन मोहें।।

जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महापद्मा' सुखकारी, आर्यखण्ड की सुषमा।
धर्मधुरंधर भव्य रहें नित, गावें जिन गुण महिमा।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावती' मनोहर, आर्यखण्ड की महिमा।
श्रावक नित्य क्रिया षट् पालें, गावें जिनगुण गरिमा।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्य-खण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखा' देश विदेह अपर में, तीर्थंकर अवतरते।
देव इंद्र मिल करें महोत्सव, मुनिगण का मन हरते।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' देश विदेह सुहाना, कमल नयन अप्सरियाँ।
जिनगुण गातीं नर्तन करतीं, भक्ति करें किन्नरियाँ।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदा' देश विदेह मनोहर, जिनवृष सूर्य चमकता।
मुनिमन कमल खिलाता नितप्रति, मोह अंधेरा हरता।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सरित्' के मध्य कहे हैं, आर्यखण्ड में मानव।
असि मषि आदिक षट् किरिया से, हरें पाप रिपु दानव।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसरितादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतारण्य वेदिका सन्निध, सीतोदा उत्तर में।
'वप्रा' देश विदेह शोभता, आर्यखण्ड शुभ उसमें।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' छह खण्डों में, आर्यखण्ड अति सोहे।
ईति भीति परचक्र अना-वृष्टी अतिवृष्टि न होहें।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावप्रा' गुणशाली, वहाँ गुणी जन बसते।
मुनि चक्री हलधर आदिक भी, आर्यखण्ड में रमते।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वप्रकावती' सुहाता, आर्यखण्ड मनहारी।
नदियों के कलकल रव से वहाँ, रमें सर्व नर-नारी।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा' देश विदेह वहाँ पर, गुणगण पुष्प खिले हैं।
मानव जन की कीर्ति सुगंधी, सब दिश में फैले है।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' छह खण्डों में, आर्यखण्ड सुरभित है।
तीर्थंकर की पुण्य सुगंधी, त्रिभुवन में विकिरत है।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' महामनोहर, आर्यखण्ड की शोभा।
तीर्थंकर का अतिशय लखकर, सुरगण का मन लोभा।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमालिनी' देश वहाँ पर, आर्यखण्ड अति शोभे।
मुनिमन कमल विकासी भास्कर, सहस्र किरण से शोभे।।
जिनवर मुनिगण जिनवृष जिनश्रुत, जिनप्रतिमा जिनआलय।
नमूँ-नमूँ नित भक्तिभाव से, पाऊँ सौख्य सुधालय।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्य-खण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद –

अपर धातकी दक्षिण दिश में, गंगा सिन्धू नदियाँ इसमें।
आर्यखण्ड में जिनवर होते, जिनगृह वंदत अघमल धोते।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि दक्षिणदिक्भरतक्षेत्रार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश में ऐरावत है, छह खण्ड मध्य आर्यखण्ड शुभ है।
जिनवर मुनिगण जिनप्रतिमायें, पूजत ही सब पाप पलायें।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि उत्तरदिक्ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (गीता छंद)–

इस अपर धातकि खण्ड में, शुभ कर्मभू चौंतीस हैं।
सबमें कहे छह खण्ड उनके, मध्य आरजखण्ड हैं।।
तीर्थेश चक्री मुनिवरा, जिनधर्म जिनश्रुत आदि हैं।
जिनबिंब जिनगृह को जजूँ , ये सर्व सुखकर ख्यात हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अपर धातकि द्वीप में, नित आर्यिकायें विहरतीं।
ये धर्ममूर्ति महाव्रतों से, शुद्ध मानों सरस्वती।।
वर ज्ञान ध्यान तपो निरत, इक साटिका परिग्रह धरें।
इनको जजें हम भक्ति से, ये भक्त पातक परिहरें।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वार्यिकाभ्यः-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस द्वीप में तीर्थंकरों के, गर्भ जन्मोत्सव हुये।
तप ज्ञान मोक्ष कल्याण के थल, पूज्य पावन हो गये।।
गणधर मुनीश्वर के वहाँ, तप ज्ञान मुक्तिस्थान जो।
मैं पूजहूँ नित अर्घ्य ले, इन तीर्थक्षेत्र स्थान को।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-गणधरमुनिगणपंचकल्याणकादितीर्थक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

जाप्य- **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–गीता छंद –

जय जय जिनेश्वर देव, तीर्थंकर प्रभू जिन केवली।
जय सिद्ध परमेष्ठी सकल, गणधर गुरू श्रुतकेवली।।
जय जय गुरू आचार्यवर, उवझाय साधूगण मुनी।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, बिंब जिनगृह सुख खनी।।1।।

नवदेवता जयशील हैं, ये कर्मभूमी में रहें।
ये सर्व मंगल लोक में, उत्तम शरणमय हो रहें।।
इनकी करूँ मैं वंदना, कर जोड़ नाऊँ शीश को।
इनकी करूँ मैं अर्चना, शत-शत झुकाऊँ शीश को।।2।।

जिनधर्म में कुछ गुण नहीं, सुर देविगण बलि मांगते।
इस विधि कहें जो मूढ़जन, वे दर्शमोहिनि बांधते।।
जो केवली श्रुत संघ को, जिनधर्म सुर को दोष दें।
वे मोहिनी दर्शन अशुभ को, बांधकर दुख भोगते।।3।।

जिनकेवली को रोग हो, आहार भी लेकर जियें।
श्रुत में कहा है मांस भक्षण, साधुगण निर्लज्ज हैं।।
ये सब असत् अपवाद हैं, हे नाथ! मैं इनसे बचूँ।
सम्यक्त्वनिधि रक्षित करूँ, हे नाथ! भवदुख से बचूँ।।4।।

क्रोधादि अशुभ कषाय का, उद्रेक जब अति तीव्र हो।
चारित्र मोहिनि बंध हो, नहिं चरित धारण शक्ति हो।।
चारित्रमोह अनादि से, हे नाथ! निर्बल कर रहा।
मेरी अनंती आत्मशक्ती, छीन कर दुख दे रहा।।5।।

करके कृपा हे नाथ! अब, चारित्रमोह निवारिये।
चारित्र संयम पूर्ण हो, भवसिंधु से अब तारिये।।
प्रभु आप ही पतवार हो, मुझ नाव भवदधि में फंसी।
अब हाथ का अवलंब दो, ना देर कीजे मैं दुखी।।6।।

इन आठ कर्मों में अधिक, बलवान एकहि कर्म है।
इसके अठाइस भेद हैं, बहु भेद सर्व असंख्य हैं।।
ये मोहिनी ही स्थिती, अनुभागबंध करे सदा।
ये मोहिनी संसार का, है मूल कारण दुःखदा।।7।।

हे नाथ! ऐसी शक्ति दो, मैं सर्व ममता छोड़ दूँ।
निज देह से भी होऊँ निर्मम, सर्व परिग्रह छोड़ दूँ।।
निज आत्म से ममता करूँ, निज आत्म की चर्चा करूँ।
निज आत्म में तल्लीन हो, निज आत्म की अर्चा करूँ।।8।।

ऐसा समय तुरतहिं मिले, निज ध्यान में सुस्थिर बनूँ।
उपसर्ग परिषह हों भले, निज तत्त्व में ही थिर बनूँ।।
निज आत्म अनुभव रस पिऊँ,परमात्म पद की प्राप्ति हो।
निज 'ज्ञानमति' ज्योती दिपे, जो तीनलोक प्रकाशि हो।।9।।

–दोहा–

जब तक नहिं परमात्म पद, तुम पद में मन लीन।
एक घड़ी भी नहिं हटे, बनूँ आत्म लवलीन।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भक्ति से नव देवता विधान करेंगे।
वे भव्य नवों निधी से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य ''ज्ञानमती '' से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्ष महल में अनंत काल रहेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.-5)

पूर्व पुष्करार्धद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा

–अथ स्थापना (नरेंद्र छंद)–

पूरब पुष्कर द्वीप अर्ध में, कर्मभूमि चौंतिस हैं।
एक भरत इक ऐरावत है, देश विदेह बत्तिस हैं।।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु परम गुरु माने।
जिनवृष श्रुत जिनबिंब जिनालय, पूजत भव दुख हाने।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अथ अष्टक (नाराच छंद)–

नाथ! आप पाद पद्म तीन धार दे जजूँ।
ताप त्रय विनाश हेतु बार-बार मैं भजूँ।।
तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आप चर्ण में सुगंधि गंध चर्चते।
देह व्याधि नष्ट हो निजात्म कीर्ति वर्धते।।

तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आपके निकट में शालिपुंज को धरूँ।
पूर्ण सौख्य दीजिये समस्त कर्म को हरूँ।।
तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिका गुलाब मोगरा चुनाय के लिये।
नाथ! आप चर्ण में चढ़ाय हर्ष हो हिये।।
तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवरादि थाल में भरायके चढ़ावते।
भूख व्याधि नष्ट हो असीम शक्ति पावते।।
तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ज्योति की प्रजाल आरती करूँ अबे।
मोह ध्वान्त दूर हो सुज्ञान सूर्य भी उगे।।
तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेय अग्नि में समस्त कर्म भस्म हों।
स्वात्म सौख्य हो भले अपूर्व ज्ञान रश्मि हों।।
तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम संतरा अनार आपको चढ़ायके।
मुक्तिवल्लभा निमित्त आपको मनायके।।
तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ में सुवर्ण पुष्प लेय के चढ़ायके।
आत्म गुण अनंत शीघ्र नाथ! दीजिए अबे।।
तीर्थनाथ सिद्ध साधु जैनधर्म को जजूँ।
जैनबिंब धाम अर्च सर्व सौख्य को भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिन चरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ निज गुण संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

पूरब पुष्कर द्वीप में, कर्मभूमि चौंतीस।
पुष्पाञ्जलि कर पूजहूँ, नमूँ-नमूँ नत शीश।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

–नरेंद्र छंद –

कच्छा देश विदेह मेरु-मंदर के पूरब में है।
छह खण्डों में आर्यखण्ड इक, क्षेमापुर उसमें है।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' छह खण्डों में, आर्यखण्ड सुखभूमी।
क्षेमपुरी नगरी है मधि में, पुण्य पुरुष की भूमी।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' में आरज-खण्ड कर्मभूमी है।
वहाँ अरिष्टा है रजधानी, शाश्वत वह भूमी है।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' वहाँ पर, रक्ता-रक्तोदा हैं।
मध्य रजतगिरि आर्यखण्ड मधि ,नगरि अरिष्टपुरी है।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।4।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के उत्तर में, आवर्ता देश विदेहा।
आर्यखण्ड में नगरी खड्गा, वहाँ बने गत देहा।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' शाश्वत, पूर्वविदेह कहाता।
आर्यखण्ड में पुरी मंजूषा, वहाँ न लेश असाता।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' के छह खण्ड में, आर्यखण्ड मनहारी।
औषधि नगरी है रजधानी, पुण्य पुरुष अवतारी।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुखभरते।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' वहाँ पर, छह खण्ड बने सदा से।
आर्यखण्ड में पुंडरीकिणी, पुरी सुमुक्ति वहाँ से।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुखभरते।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण दिश में, देवारण्य समीपे।
'वत्सा' देश सुआर्यखण्ड में, नगरि सुसीमा दीपे।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुखभरते।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' आर्यखण्ड में, पुरी कुण्डला सोहे।
तीर्थंकर चक्री हलधर नर, मुनिगण भी मन मोहें।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुखभरते।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' में छह खण्ड, आर्यखण्ड के बीचे।
अपराजिता पुरी में मुनिगण, भव्य खेत को सींचें।।

आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' वहाँ पर, जन वात्सल्य भरे हैं।
प्रभंकरा पुरि आर्यखंड में, जिनवर जन्म धरे हैं।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह कहाता, अंका है रजधानी।
आर्यखण्ड में जन्मे मानव, वरें स्वयं शिवरानी।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' छह खण्डों में, आर्यखण्ड सुखकारी।
पद्मावति नगरी रजधानी, तीर्थंकर को प्यारी।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रमणीया' है देश विदेहा, आर्यखण्ड के मधि में।
नगरी शुभा शोभती सुन्दर, तीर्थंकर हों उसमें।।

आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' सुहाना, आर्यखण्ड के बीचे।
रत्नसंचया है शुभ नगरी, जिनवच भविजन सींचें।।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि नित, जिनवर सदा विहरते।
मुनिगण धर्म जिनालय प्रतिमा, जजत भव्य सुख भरते।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

'पद्मा' देश सुअपर विदेहे, आर्यखण्ड में अश्वपुरी है।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' में छह खण्डा, सिंहपुरी मधि आरजखण्डा।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महापद्मा' आरज में, महापुरी रजधानी मधि में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावती' सुसोहे, आर्यखण्ड मधि विजयपुरी है।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखा' देश विदेह अनूपा, आर्यखण्ड में अरजा भूपा।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' देश छहों खण्डों में, विरजा नगरी आर्यखण्ड में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदा' देश सुआर्यखण्ड में, पुरी अशोका ठीक मध्य में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरित' देश के आर्यखण्ड में, पुरी वीतशोका है मधि में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसरित्देशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वप्रा' देश के आर्यखण्ड में, रजधानी विजयापुरि मधि में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' आर्यखण्ड में, पुरी वैजयन्ता है मधि में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावप्रा' आरज में, पुरी जयंता जिनवर जन्में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वप्रकावती' आर्य में, अपराजिता पुरी है मधि में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा' देश सुआरज खण्ड में, चक्रपुरी में जिनवर जन्में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' के आरज में, खड्गपुरी रजधानी मधि में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' आर्यखण्ड है, मध्य अयोध्या रजधानी है।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमालिनी' आर्यखण्ड में, पुरी अवध्या रजधानी में।।
तीर्थंकर मुनिगण जिनगेहा, जजूँ नित्य मैं धर मन नेहा।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

इस पूर्व पुष्कर द्वीप में, दक्षिण दिशी शुभ 'भरत' है।
रजताद्रि गंगा-सिंधु से, छह खण्ड में इक आर्य है।।
मधि में 'अयोध्या' राजधानी, तीर्थंकर जन्में वहाँ।
इस आर्यखण्ड में देवता नव, हो रहे पूजूँ यहाँ।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि दक्षिणदिक् भरतक्षेत्रार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस द्वीप में उत्तर दिशी, वर क्षेत्र ऐरावत कहा।
छह खण्ड के मधि आर्य में, नगरी 'अवध्या' शुभ अहा।।
तीर्थंकरादी जन्म से, नव देवता से पूज्य है।
मैं अर्घ्य लेकर पूजहूँ, निज आत्मा हो शुद्ध है।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि उत्तरदिक् ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्यं –

चौंतीस हैं ये कर्मभूमी, तीर्थकर होते यहाँ।
भवि कर्म हनकर सिद्ध बनते, साधुगण विहरें यहाँ॥

जिनबिंब जिनमंदिर अमित, मैं पूजहूँ नित भक्ति से।
आनिष्ट योग व इष्ट के, वीयोग विनशें भक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन कर्मभूमी में सदा ही, आर्यिकायें विहरतीं।
कुल शील व्रत से शुद्ध हैं, बस एक साड़ी पहनतीं।।
उपचार से महाव्रत धरें, सुर इंद्र नरपति वंद्य हैं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, ये भक्तवत्सल मात हैं।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वार्यिकाभ्यपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकरों के गर्भ जन्मोत्सव व तप ज्ञानादि से।
जो पूज्य तीरथ हो गये, उनको नमूँ नित भाव से।।
गणधर मुनीश्वर के वहाँ पर, ज्ञान मुक्ति स्थान हैं।
उन तीर्थक्षेत्रों को जजूँ, ये मुक्तिकारण मान्य हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थिततीर्थंकरगणधरमुनिगणपंचकल्याणकादितीर्थक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

जाप्य मंत्र - **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–शंभु छंद –

जय जय पुष्कर के तीर्थंकर,जय सिद्ध साधुगण परमेष्ठी।
जय जय जिनधर्म जिनागम हों, जय जय जिनगृह जिनवर मूर्ती।।
जय जय जय सर्व आर्यिकायें, जो आतम अनुभव करती हैं।
जय सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण, ये भवदधि तारण युक्ती हैं।।1।।

इकतालिस सहस पांच सौ उन्यासी योजन का 'भरत'कहा।
उनतीस हजार सात सौ चौरानवे[1] योजनों मात्र रहा।।
बत्तिस विदेह में एक-एक, क्षेत्रों का व्यास प्रमाण रहा।
इनमें छह खण्डों मध्य आर्य-खण्डों में जिन मुनि भ्रमण कहा।।2।।

बहु आरंभ और परिग्रह से ,नरकायू बंध हुआ करता।
मायाचारी अरु आर्त्तध्यान से ,तिर्यगायु का बंध करता।।
अल्पारंभ अल्प परिग्रह से ,नर आयू बंध हुआ करता।
नितप्रति कोमल परिणामों से ,मानव आयू का बंध करता।।3।।

बिन शील व्रतों के अशुभ भाव,नरकायु तिर्यक् के कारण हैं।
शुभ भाव शील व्रत के बिन भी,नर आयु देव के कारण हैं।।
मुनि के महाव्रत संयम आदि, अणुव्रत आदी से देव आयु।
पूजा दानादि क्रियाओं से, बंधती है उत्तम देव आयु।।4।।

बिन इच्छा के व्रत पालें या, नानाविध तप जो करते हैं।
वे भी देवायू बंध करें, समकित बिन भी सुर बनते हैं।।
सम्यग्दर्शन से देवायू ,यह निश्चय शास्त्र बताते हैं।
सम्यग्दृष्टी जन दुर्गति में, नहिं जाते दिव में जाते हैं।।5।।

तीनों लोकों त्रयकालों में, सम्यक्त्व समान न हितकारी।
मिथ्यात्व समान न शत्रू है, समकित ही है शिव सुखकारी।।
हे नाथ! आपकी भक्ती से, सम्यग्दर्शन दृढ़ बन जावे।
नरकादि गती में नहिं जाऊँ, इक दो भव पा भव नश जावे।।6।।

हो भेद ज्ञान निश्चल मेरा, बस निज का ही नित ध्यान रहे।
चारित्र सुदृढ़ होवे मेरा, अंतिम क्षण तक शुभ ध्यान रहे।।
दुःखों का क्षय होवे पुनरपि, कर्मों का क्षय होवे प्रभु जी।
हो बोधिलाभ फिर सुगति गमन, ऐसा ही वर दीजे प्रभु जी।।7।।

---

1. सिद्धांतसार दीपक, पृष्ठ 363।

हो अंत समाधीमरण नाथ! जिनगुण की संप्राप्ती होवे।
प्रभु 'ज्ञानमती' की अर्ज सुनो, इनसे अतिरिक्त न कुछ होवे।।
जब तक नहिं निज पद मिले नाथ! तब तक मन में तुम चरण रहें।
मेरा मन तुम पद में रत हो, इक क्षण भी अन्य कहीं न रहे।।8।।

–दोहा–

अर्हत्सिद्धाचार्य गुरु, पाठक साधु महान।
जिनवृष श्रुत प्रतिमा निलय, नमूँ-नमूँ गुणखान।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

–शेर छंद–

जो भक्ति से नव देवता विधान करेंगे।
वे भव्य नवों निधी से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य ''ज्ञानमती '' से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्ष महल में अनंत काल रहेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.-6)

पश्चिम पुष्करार्धद्वीपसंबंधि नवदेवता पूजा

–अथ स्थापना (नरेंद्र छंद)–

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, कर्मभूमि हैं चौंतिस।
इनके आर्यखण्ड में नितप्रति, जिनवर विहरें शिवप्रद।।
मुनिगण धर्म जिनालय जिनवर-बिंब जजूँ मन लाके।
आह्वानन कर थापूँ इत मैं, चिन्मय ज्योति जगाके।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अथ अष्टक (बसंततिलका छंद)–

गंगा नदी सलिल से त्रय धार देऊँ।
हे नाथ! जन्म मृति को अब दूर कर दो।।
अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन घिसा चरणों समर्चूं ।
हे नाथ! ताप त्रय दूर करो हमारे।।

अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान धवलाक्षत पुंज धरके।
पूजूँ तुम्हें प्रभु अखण्ड गुणानुरागी।।
अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब मचकुंद चढ़ाय चरणों।
हे नाथ! स्वात्मसुख शांति बढ़ाय दीजे।।
अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू पुआ इमरती हलुआ चढ़ाऊँ।
हे नाथ! भूख रुज शांति करो अनादी।।
अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती हरती अंधेरा।
हे नाथ! आरति करूँ निज ज्ञान दीजे।।

अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ दशांग वर धूप सुअग्नि में मैं।
हे नाथ! कर्म निर्मूल करो सभी ही।।
अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अखरोट चढ़ाय पूजूँ।
हे नाथ! मोक्ष फल आश फले हमारी।।
अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ कनकाब्ज[1] तुम्हें चढ़ाऊँ।
हे नाथ! रत्नत्रय पूर्ण करो हमारे।।
अर्हंत सिद्ध मुनिवृंद जजूँ रुची से।
जैनेंद्रगेह जिनबिंब नमूँ-नमूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. स्वर्णकमल।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिन चरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ निज गुण संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, जिनवर मुनिगण नित्य।
जिनगृह जिनप्रतिमा जजूँ , पुष्पाञ्जलि कर इत्य।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

–नरेंद्र छंद –

विद्युन्माली के पूरब में, सीतानदि उत्तर में।
'कच्छा' देश छहों खण्डों युत, आर्यखण्ड मधि उसमें।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कर के पूरब विदेह में, देश 'सुकच्छा' सोहै।
आर्यखण्ड में कर्मभूमि है, तीर्थंकर ध्वनि होहै।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. यहाँ

देश 'महाकच्छा' अति सुंदर, सुर ललनायें आतीं।
आर्यखण्ड में जिनवर के गुण, गाती नहीं अघातीं।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' मनोहर, मधि विजयार्ध रजत का।
आर्यखण्ड में विद्याधरियाँ, जिनगुण गातीं नीका।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वहाँ 'आवर्ता' सुंदर, इंद्र-इंद्राणी आते।
आर्यखण्ड में जिनजन्मोत्सव, करते मोद मनाते।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' मनहर, आर्यखण्ड की शोभा।
चक्रवर्ति हलधर नारायण, राज्य करें मन लोभा।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' धर्मपूर्ण है , जन-जन सर्वसुखी हैं।
आर्यखण्ड में साधु तपस्वी, रहते स्वात्म सुखी हैं।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' आर्य में, पुण्डरीकिणी नगरी।
तीर्थंकर की दिव्यध्वनी सुन, जनजन की मति सुधरी।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवारण्य वेदिका सन्निध, सीता नदि दक्षिण में।
'वत्सा' देश धर्मवत्सलयुत, आर्यखण्ड इस मधि में।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' के आरज में, धर्मप्रेम नित बरसे।
देव असुर क्या इंद्र स्वयं भी, यहाँ जन्म को तरसे।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' अतिसुंदर, मुनिगण समरस पीते।
आर्यखण्ड में धर्म ग्रहण कर, जन-जन सुख से जीते।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' यहाँ पर, आर्यखण्ड में नित ही।
कर्मभूमि चौथे युग सदृश, जिन कल्याणक नित ही।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह मनोहर, सुर-विद्याधर रमते।
आर्यखण्ड में जिन गुण गाते, किन्नरगण नहिं थकते।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' आर्यखण्ड में, वन-उद्यान घनेरे।
सभी भव्यजन भक्तिभाव से, जिन गुण कहें सबेरे।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रमणीया' है देश मनोहर, आर्यखण्ड में ऋषिगण।
निज आत्मा में नितप्रति रमते, गाते जिनगुण मुनिगण।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' मध्य में, आर्यखण्ड सुखकारी।
यतिगण नित्य आत्म अनुभव रस, पीते हैं गुणकारी।।
तीर्थंकर मुनिगण नित विहरें, जिनवर धर्म प्रवर्ते।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ , ये भव-भव दुख हरते।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद –

पश्चिम पुष्कर मध्य, अपर विदेह सुहावे।
'पद्मा' देश सुमध्य, आर्यखण्ड मन भावे।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' मध्य, आर्यखण्ड मन मोहे।
जिनवर भवन उतंग, सुर नर कृत अति सोहे।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महापद्मा' ये, यआरजखण्ड वहाँ पे।
सुर किन्नर गुण गाय, जजें जिनेंद्र वहाँ पे।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश विदेह अपूर्व, कहा 'पद्मकावति' है।
वहाँ सदा जिनसूर्य, मुनिपंकज विकसत हैं।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखा' देश विदेह, भव्य देह को नाशें।
आर्यखण्ड में नित्य, केवलज्ञान प्रकाशें।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' देश विदेह, आर्यखण्ड में दिनमणि।
मुनी बनें गतदेह, पा लेते निज गुणमणि।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदा' देश अपूर्व, आर्यखण्ड में जिनशशि।
भविमन कुमुद विकासि, शोभें नित शिवतियपति।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरित' विदेह महान, वहाँ धर्म सरिता है।
आरजखण्ड निधान, जिनवर शिवभर्ता हैं।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसरितादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतारण्य समीप, सीतोदा उत्तर में।
'वप्रा' देश विदेह, आर्यखण्ड इक उसमें।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' मध्य, आर्यखण्ड अति सोहे।
जैनधर्म अभिनंद्य, भविजन का अघ धोहै।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम देश विदेह, 'महावप्रा' सुखदानी।
आर्यखण्ड में साधु, करें कर्म की हानी।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश विदेह महान, नाम 'वप्रकावति' है।
आर्यखण्ड सुखखान, रमें वहाँ सुरपति हैं।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा' देश विदेह, आर्यखण्ड गुणखाना।
भविजन धर मन नेह, नित्य जजें जिनधामा।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' मध्य, जिनवर सुयश सुगंधी।
आर्यखण्ड में धर्म, भविजन मन आनंदी।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' नित्य, छह खण्डों से शोभे।
आर्यखण्ड में भव्य, धर्मक्रिया से शोभें।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमालिनी ' देश, आर्यखण्ड इस मधि में।
मुनी दिगंबर भेष, धार रमें समरस में।।
तीर्थंकर मुनिनाथ, जिनमंदिर सुखकारी।
जिनप्रतिमा जिनधर्म, जजूँ स्वात्म गुणकारी।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद–

इस अपर पुष्करार्ध में दक्षिण दिशा विषे।
है क्षेत्र 'भरत' नाम से छहखण्ड उस विषे।।
इक आर्यखण्ड में जिनेंद्र देव मुनिवरा।
जिनमूर्तियाँ जिनगेह जजूँ मैं रुचीधरा।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि दक्षिणदिक्भरतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस द्वीप में उत्तर दिशी शुभ क्षेत्र ऐरावत।
छह खण्ड मध्य आर्यखण्ड में मुनी संतत।।
तीर्थेश चौथे काल में चौबीस ही होते।
बस पाँचवें तक धर्म जजूँ पाप को धोते।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि उत्तरदिक्ऐरावतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

पश्चिम सुपुष्करार्ध में चौंतीस कर्मभू।
जिनराज व मुनिराज जैनधर्म मुक्ति भू।।
जिनमूर्तियाँ जिनगेह जो कृत्रिम बहुत बने।
इन पूजते संसार के सब सौख्य हों घने।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीस्विाहा।

इन कर्मभूमि में पवित्र आर्यिकायें हैं।
कुल शील शुद्ध धर्मध्वजा फरहरायें हैं।।
इन आर्यिकाओं की सदा मैं वंदना करूँ ।
हे मात! श्रेष्ठबुद्धि दो मैं अर्चना करूँ ।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन कर्मभू में तीर्थकर के पंचकल्याणक।
गणधर व मुनिगणों कि ज्ञान मोक्ष भूमि शुभ।।
उन सब पवित्र तीर्थ की मैं अर्चना करूँ ।
सब तीर्थक्षेत्र वंद के यम खण्डना करूँ ।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थिततीर्थंकर-गणधरमुनिगणपंचकल्याणकादितीर्थक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

जाप्य मंत्र - **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

कर्मभूमि में भव्यजन, कर्म काट हों मुक्त।
इनमें ही नवदेवता, गाऊँ गुण रुचियुक्त।।1।।

– शंभु छंद–

जय जय अरिहंत सिद्ध सूरी, जय उपाध्याय सब साधु मुनी।
जय जय जिनधर्म जिनागम की, जय जिनप्रतिमा जिनधाम मणी।।
बत्तीस विदेहों में शाश्वत, जिनधर्म एक ही चलता है।
बस भरत और ऐरावत में, षट्काल परावृत चलता है।।2।।

बत्तीस विदेहों में नित ही, नव देव विराजे रहते हैं।
जिनप्रतिमा जिनमंदिर वहाँ पर, सुर नर निर्मापित करते हैं।।
भरतैरावत में चौथे युग में, अर्हत् सिद्ध हुआ करते।
पंचम तक सब मुनि धर्मशास्त्र, जिनमूर्ति जिनालय भी रहते।।3।।

जिनधर्म सुता सम आर्यिकायें, रत्नत्रय गुणमणि भूषित हैं।
ब्राह्मी सम जिनवर कन्याएँ , निज आत्म सुधारस पूरित हैं।।
इन सब नव देवों को मेरा, शत-शत वंदन शत-शत वंदन।
इन सभी देवताओं को भी, मेरा शत वंदन अभिनंदन।।4।।

मन-वच-तन से कौटिल्य करें, अरु विसंवाद जो करते हैं।
वे अशुभ नाम कर्मों को बांधें, बहुत दुःख को भरते हैं।।
मन-वचन-काय को सरल रखें, विपरीत प्रवृत्ति नहीं करते।
शुभ नाम कर्म का बंध करें, वे शुभ गति पाकर सुख भरते।।5।।

जो दर्शविशुद्धि आदि सोलह, भावन भाते तद्रूप बनें।
वे तीर्थंकर प्रकृती बांधें, त्रिभुवन के नेता आप बनें।।
परनिंदा आत्मप्रशंसा कर, परगुण को नित्य छिपाते हैं।
निज के अवगुण को गुण कहते, वे नीच गोत्र को बांधे हैं।।6।।

स्वनिंदा पर की प्रशंसा कर, जो नम्र प्रवृत्ती रखते हैं।
नित उच्च गोत्र का बंध करें, वरवंश तिलक वो बनते हैं।।
जो पर के दान-लाभ-भोगों में, विघ्न करें बाधा डालें।
वे अन्तराय का बंध करें, निज कार्यों में बाधा डालें।।7।।

इन अशुभ नाम गोत्रों का मैं, बहु अंतराय का बंध किया।
हे नाथ! अशुभ का खण्डन हो, इस हेतु आपकी शरण लिया।।

शुभ नाम गोत्र का उदय फले, कटु अंतराय की हानी हो।
हे नाथ! दर्शशुद्ध्यादिक से, शुभ प्रकृति बंधे सुखदानी हो।।8।।

शुभ कर्म उदय से वज्रवृषभ, नाराच आदि संहनन मिलें।
शिवकारण सामग्री पाकर, रत्नत्रय कलियाँ तुरत खिलें।।
हे नाथ! सर्व आठों कर्मों का, मैं निर्मूल विनाश करूँ।
निज " ज्ञानमती " ज्योती प्रगटे, जिससे निज आत्म विकास करूँ।।9।।

–दोहा–

कर्मभूमि में मुनि बनूँ , करूँ कर्म की हानि।
परमानंदामृत पिऊँ, बनूँ स्वयं गुणखानि।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

–शेर छंद–

जो भक्ति से नव देवता विधान करेंगे।
वे भव्य नवों निधी से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य "ज्ञानमती " से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्ष महल में अनंत काल रहेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

दोहा – चिन्मय चिंतामणि सकल, चिंतित फल दातार।
तुम गुणकण भी गाय के, पाऊँ सौख्य अपार।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय जिन मोह अरी हन के, अरिहंत नाम तुमने पाया।
जय जय शत इंद्रों से पूजित, अर्हत् का यश सबने गाया।।
प्रभु गर्भागम के छह महिने, पहले ही सुरपति आज्ञा से।
धनपति ने रत्नमयी पृथ्वी, कर दी रत्नों की धारा से।।2।।

श्री ह्री धृति आदिक देवीगण, माता की सेवा खूब करें।
माता की गर्भ शुद्धि करके, निज का नियोग सब पूर्ण करें।।
तीर्थंकर माँ पिछली रात्री में, सोलह स्वप्नों को देखें।
प्रातः प्राभातिक विधि करके, आकर पति से उन फल पूछें।।3।।

त्रिभुवनपति जननी तुम होंगी, पति के मुख से फल सुन करके।
रोमांचित हो जाती माता, अतिशय सुख का अनुभव करके।।
जब प्रभु तुम गर्भ बसे आके, इंद्रों ने उत्सव खूब किया।
पन्द्रह महिनों तक रत्नवृष्टि, करके सब दारिद दूर किया।।4।।

जब जन्म लिया तीर्थेश्वर ने, त्रिभुवन जन में आनंद हुआ।
इंद्रों द्वारा मंदरगिरि पर, प्रभु का अभिषेक प्रबंध हुआ।।
जब प्रभु के मन वैराग्य हुआ, लौकांतिक सुरगण भी आये।
प्रभु की स्तवन विधी करके, श्रद्धा भक्तीवश हरषाये।।5।।

दीक्षा कल्याणक उत्सव कर, इंद्रों ने अनुपम पुण्य लिया।
जब केवलज्ञान हुआ प्रभु को, जन-जन ने निज को धन्य किया।।
अनुपम वैभवयुत समवसरण, द्वादश कोठे में भवि बैठें।
अरिहंत अनंतचतुष्टय युत, सब जन को हितकर उपदेशें।।6।।

इन पंचकल्याणक के स्वामी, तीर्थंकरगण ही होते हैं।
कुछ दो या तीन कल्याणक पा, निज पर का कल्मष धोते हैं।।
बहुतेक भविक निज तप बल से, चउ घाति कर्म का घात करें।
ये सब अरिहंत कहाते हैं, जो केवलज्ञान विकास करें।।7।।

जिन अष्टकर्म को नष्ट किया, लोकाग्र विराजें जा करके।
वे सिद्ध हुए कृतकृत्य हुए, निज शाश्वत सुख को पा करके।।
आचार्य परमगुरु चतुःसंघ, अधिनायक गणधर कहलाते।
जो पढ़े पढ़ावें जिनवाणी, वे उपाध्याय निज पद पाते।।8।।

जो करें साधना निज की नित, वे साधु परम गुरु माने हैं।
ये पंच परमगुरु भक्तों के, अगणित दुःखों को हाने हैं।।
ये पांचों ही मंगलकारी, लोकोत्तम शरणभूत माने।
इनकी शरणागत आ करके, निज कर्म कुलाचल को हाने।।9।।

जिनधर्म अहिंसा धर्म परम, त्रिभुवन में शान्ति प्रदाता है।
जिन आगम द्वादशांग वाङ्मय, भवि को शिवपथ दिखलाता है।।
जिनप्रतिमा कृत्रिम-अकृत्रिम, आनन्त व असंख्यात जग में।
जिनचैत्यालय भी इतने ही, त्रयकालों में मानें श्रुत में।।10।।

इनको अर्चूं पूजूँ वंदूँ, औ नमस्कार भी नित्य करूँ।
निज हृदय कमल में धारण कर, सम्पूर्ण अमंगल विघ्न हरूँ।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, होवे मम बोधि लाभ होवे।
मुझ सुगती गमन समाधिमरण, होकर जिनगुण संपत्ति होवे।।11।।

दोहा – नवदेवों की भक्ति यह, करे मृत्यु का घात।
केवल ''ज्ञानमती'' सहित, मिले मुक्ति साम्राज्य।।12।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधि-सप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भक्ति से नव देवता विधान करेंगे।
वे भव्य नवों निधी से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य ''ज्ञानमती '' से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्ष महल में अनंत काल रहेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा–

तीर्थंकर चक्री मदन, त्रयपद धारी ईश।
शांतिनाथ भगवान को, नमूँ-नमूँ नत शीश।।1।।

कुंथुनाथ-अरनाथ प्रभु, तीन-तीन पद नाथ।
इनके श्री चरणाब्ज को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

वर्तमान में वीर प्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुये, बहु आचार्य महान।।3।।

मूल-संघ में कुंदकुंद गुरु, अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कार गण में हुए , सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।4।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगंबराचार्य।
चरित चक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।5।।

इनके शिष्योत्तम श्री, वीरसागराचार्य।
पहले पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।6।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, तेरह जगत्प्रसिद्ध ।
पौष शुक्ल पंचमि तिथी[1], हस्तिनागपुर तीर्थ।।7।।

मैंने गणिनी ज्ञानमती, किया विधान प्रपूर्ण।
नवदेवता विधान लघु, भरे सौख्य संपूर्ण।।8।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत् में व्याप्त।
तब तक ''ज्ञानमती'' कृती, रहे विश्व विख्यात।।9।।

(इति नवदेवता विधान संपूर्ण ।)
वर्द्धतां जिनशासनं ।

1. 4-1-1987

आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय नवदेव प्रभो, स्वामी जय नवदेव प्रभो।
शरण तुम्हारी आए, आरति हेतु प्रभो।। ॐ जय.।।

श्री अरिहंत जिनेश्वर, प्रथम देव माने। स्वामी प्रथम.....
दूजे देव कहाते, सिद्धशिला स्वामी।। ॐ जय.....।।1।।

चउसंघ नायक सूरी, तृतिय देवता हैं। स्वामी तृतिय.....
चौथे देव कहाए, उपाध्याय मुनि हैं।। ॐ जय.....।।2।।

सर्वसाधु हैं पंचम, श्री जिनधर्म छठा। स्वामी श्री जिन.....
सप्तम देव जिनागम, जिनवचसार कहा।। ॐ जय....।।3।।

श्री जिनचैत्य हैं अष्टम, जिनप्रतिमा जानो। स्वामी जिन.....
श्री जिनचैत्यालय को, देव नवम मानो।।ॐ जय....।।4।।

ढाई द्वीप के अन्दर, ये नव देव रहें। स्वामी ये नव.....
उनकी भक्ती करके, नर भी देव बनें।।ॐ जय....।।5।।

दो ही देवता आगे, द्वीपों में माने। स्वामी द्वीपों.....
श्री जिनचैत्य जिनालय, अकृत्रिम माने।।ॐ जय....।।6।।

नवदेवों की आरति, करते जो निश दिन। स्वामी करते....
लहें ''चंदनामति'' वे, सुख साधन प्रतिपल।।ॐ जय....।।7।।

विधान की रचयित्री
गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना –

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं.....

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अष्टक –

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जब से, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।

उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।

धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेरछंद –

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा.....।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिः.....।।

जयमाला

–दोहा –

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन-नागिन-मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।1।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे, छोड़ी ममता माया।। माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।2।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।3।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।4।।

तीर्थ अयोध्या-मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।5।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।6।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।। माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।7।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।8।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।9।।

–दोहा–

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमति मात।।10।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभुछंद–

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें सदा पूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

पूज्य गणिनीप्रमुखश्री ज्ञानमती माताजी की मंगल आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-कभी राम बनके.....

भक्ति भाव लेकर, दीपक थाल लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।टेक।।
तुम ज्ञानमती कहलाईं,
तुम बालसती बन आईं,
दीपक हाथ लेकर, सबको साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।1।।

इतिहास की तुम निर्मात्री,
कई तीर्थों की प्रेरणाप्रदात्री,
नई याद लेकर, फरियाद लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।2।।

जम्बूद्वीप बना है धरा पर,
जिससे चमक रहा हस्तिनापुर,
वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।3।।

मांगीतुंगी अयोध्या में जाकर,
किया निर्माण नूतन वहाँ पर,
वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।4।।

पुनः तीरथ प्रयाग बनाया,
ऋषभ जिनवर का नाम गुंजाया,
पुण्यधाम लेकर, तेरा नाम लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।5।।

वीर जन्मभूमि का यश बढ़ाया,
कुण्डलपुर का विकास कराया,
श्रुत का सार लेकर, आधार लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।6।।

तुम युग-युग जिओ मेरी माता,
''चन्दना'' गाएँ सब तेरी गाथा,
श्रद्धाभाव लेकर, दीपक थाल लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।7।।